Vol 7 Issue 1 Oct. 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2017

अकत खाँ का विद्रोह – अलाउद्दीन ख़िलजी की हत्या के विफल प्रयास : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज आफ ऐजूकेशन , गुरूहरसहाय फिरोजपुर (पंजाब)

सारांश

अकत खॉ का विद्रोह स्वयं अलाउद्दीन खिलजी की असावधानी का परिणाम था। शिकार पर जाते समय नियमानुसार सेना की एक सशक्त टुकड़ी सुल्तान के साथ होनी चाहिए थी क्योंकि लगभग एक वर्ष पूर्व के नव मुसलमान विद्रोह को दृष्टिगत रखते हुए भी उसे सचेतन रहने की आवश्यकता थी। वह जानता था कि सल्तनत काल में सत्ता हस्तान्तरण संघर्ष से ही हुआ करता था, इसलिए गुप्तचरों के माध्यम से अपने नजदीकी रिश्तेदारों व आधिकारियों पर अत्याधिक अकुंश व नियंत्रण की आवश्यकता थी, फिर भी वफादार अमीरों, अधिकारियों एवं सलाहकारों द्वारा अलाउद्दीन का साथ देने पर अकत खॉ के विद्रोह को विफल कर दिया गया।

प्रस्तावना :

रणथम्भौर अभियान का नेतृत्व 1300 ई0 में दो विश्वस्त सेनानायकों नुसरत खाँ एवं उलुग खाँ द्वारा किया गया। रणथम्भौर किले के घेरे के दौरान नुसरत खाँ राणा हम्मीर देव के प्रक्षेपास्त्र से घायल हो गया तथा कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हो गयी। नुसरत खाँ की मृत्यु के बाद राणा हम्मीर देव ने उलुग खाँ को रणथम्भौर किले से पीछे हटने के लिए बाध्य कर दिया।

जब सुल्तान अलाउद्दीन के पास अपने प्रिय, विश्वासी सेनानायक एवं अंतरंग मित्र नुसरत खाँ की मृत्यु और शाही सेना का रणथम्भौर से पीछे हटने का समाचार ज्ञात हुआ तो उसने स्वयं रणथम्भौर अभियान का नेतृत्व सम्भालने के दृढ़ निश्चय किया। उसने शाही सेना को रणथम्भौर प्रस्थान के आदेश दिया तथा अपने अधिकारियों के साथ देहली से निकल कर तिलपट[1] में शिविर लगाया। यहाँ सेना एकत्रित होने के बाद ही अलाउद्दीन को रणथम्भौर की ओर प्रस्थान करना था। इस प्रकार तिलपट में कुछ समय तक नियमानुसार प्रत्येक दिन शिकार खेलता और सेना के एकत्रित होने की व्यवस्था के लिए आवश्यक निर्देश देता। प्रत्येक दिन की भांति वह शिकार पर गया और एक गाँव बदाव के[2] निकट दस – बारह व्यक्तियों के साथ रात्रि में वही पर शिविर लगाया।

इसी स्थान पर सुल्तान के स्वर्गीय भाई मुहम्मद के पुत्र एवं सुल्तान के भतीजे सुलेमान शाह जिसका उप नाम अकत खाँ था, ने सुल्तान की हत्या करने का असफल प्रयत्न करके सिंहासन हस्तगत करने की योजना बनायी।[3] इस प्रकार की योजना अकत खाँ द्वारा बनाये जान के निम्न कारण थे–

- अकत खाँ के मस्तिष्क में यह विचार था कि जिस प्रकार उसके चाचा अलाउद्दीन खिलजी ने अपने चाचा सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी की हत्या करके राज सिंहासन प्राप्त किया है उसी प्रकार यदि मैं, किसी भी प्रकार, सुल्तान एवं चाचा अलाउद्दीन खिलजी की हत्या कर दूँ तो मैं भी राजसिंहासन प्राप्त कर लूँगा।
- अकत खाँ द्वारा अलाउद्दीन की हत्या की योजना में कुछ नव मुसलमान सैनिकों एवं उसके पुराने दासों ने उसे अपना पूर्णरूप से समर्थन एवं सहायता देने का आश्वासन दिया था, क्योंकि अलाउद्दीन ने नव मुसलमानों पर कठोर अत्याचार किये थे।
- अकत खाँ द्वारा अपने अनुयायियों के साथ आखेट स्थल पर पहुँचना इस बात की पुष्टि करता है कि वह गुप्त रूप से अलाउद्दीन की गतिविधियों पर बहुत दिनों से नजर रख रहा था तथा उसने विद्रोह की योजना अचानक नहीं बनायी वरन पूर्व नियोजित थी।
- वह इस बात को भली भाँति जानता था कि आखेट स्थल पर कुछ ही व्यक्ति हैं[4] तथा वहीं पर अपनी योजना को क्रियान्वित किया जा सकता है इसलिये उसने वह स्थान चुना।

इन सभी कारणों से प्ररित होकर अकत खाँ ने जो उस समय "वकीलेदर" के पद पर नियुक्त था अलाउद्दीन की हत्या करके अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने की सोची।

दूसरे दिन प्रातः काल अलाउद्दीन ने अपने अनुचरों के साथ शिकार के लिये घेरा डाल दिया तथा "नरगाह"[5] की व्यवस्था करने का आदेश दिया। सुल्तान मैदान में मुढ़े पर बैठकर के शिकार को घेर कर लाने की प्रतीक्षा कर रहा था तथा कुछ लोग सुल्तान के चारों ओर खड़े थे। अलाउद्दीन इस प्रतीक्षा में था कि शिकार के घेरे में आने के बाद वह हाथी पर सवार हो। इसी समय सुल्तान का भतीजा अकत खाँ पूर्व नियोजित षडयंत्र के अनुसार अपने साथियों सहित घोडों पर सवार होकर शेर – शेर चिल्लाता हुआ सुल्तान अलाउद्दीन के समीप पहुँच गया और अकत खाँ सहित सभी अनुयायियों ने यकायक वाणों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। अलाउद्दीन इस प्रकार हुए अक्समात आक्रमण से घबड़ा गया और मुढ़े से गिर कर उसी मुढ़े को ढाल बनाकर तीरों को रोकने लगा। शीत ऋतु होने

के कारण सुल्तान रूई का मोटा वस्त्र और किवा पहने हुये था, सो जो भी तीर उसे लगे वह अधिक घायल न कर सके। वैसे भी अधिक तीर मुढ़े पर लगे। उस समय अगर मुढ़ा न होता तो शायद अलाउद्दीन का बचना असम्भव था। इसके अतिरिक्त आक्रमण होने के समय "मानक" नामक दास भी अलाउद्दीन के पास खड़ा था। वह स्वामी भक्त दास अपने सुल्तान के प्राण संकट में देखकर स्वयं उनके सामने ढाल के समान खड़ा हो गया। कुछ समय बाद सुल्तान के पायक दास जो उसके पीछे खड़े थे वह भी सुल्तान के सामने आकर ढाल एवं तलवारों से सुल्तान की रक्षा करने लगे।[6]

सुल्तान अलाउद्दीन की बाजू में घाव हो गये थे तथा रक्त अधिक निकल जाने के कारण वह बेहोश हो गया। जब अकत खाँ अपने सवारों के साथ सुल्तान के निकट पहुँचा और उसने उसका सिर काटना चाहा तो पायक तलवारें खींचकर युद्ध के लिए तैयार हो गये। इस प्रकार अकत खाँ घोड़े से उतरकर, साहस न होने के कारण सुल्तान पर हाथ न उठा सका।[7] इसी समय अलाउद्दीन के स्वाभी भक्त रक्षकों ने "सुल्तान मर गया – सुल्तान मर गया" बार – बार कहकर चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया। अकत खाँ जो कि अविवेकी एवं अनुभव हीन विद्रोही था, उसने पायकों की बातों पर विश्वास कर लिया और वह सुल्तान का सिर धड़ से अलग किये बिना मूर्खतावश शीघ्रताशीघ्र शाही शिवर में पहुँच गया और सुल्तान अलाउद्दीन के सिंहासन पर विराजमान हो गया।[8]

सिंहासन पर बैठकर उसने घोषणा की कि मैंने अलाउद्दीन की हत्या कर दी है। चूँकि सभी अधिकारी यंत्रवत चलने वाले थे उन्होंने उसकी बातों पर सहजता से विश्वास कर लिया, क्योकि उन्होंने सोचा कि यदि अकत खाँ ने अलाउद्दीन की हत्या न की होती तो वह अलाउद्दीन के राज सिंहासन पर बैठकर अपनी मृत्यु को निमन्त्रण देने का साहस न करता। इस प्रकार सभी कर्मचारी दरबार में उपस्थित हुए प्रत्येक ने अपना – अपना स्थान ग्रहण किया। सेना में हाहाकार मच गया लोग इधर – उधर होने लगे हाथियों पर होदे कसकर दरबार के सामने लाये गये" अमीरों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने उसे बधाईयाँ दी। नाना प्रकार के उपहार भेट किये, हाजिबों ने "बिस्मिल्लाह"[9] के नारे लगाये और उसके नाम की मस्जिदों से कुरान पढ़ी गयी।

इस प्रकार अकत खाँ दरबारियों और कर्मचारियों को दर्शन देने के पश्चात् दरबार को बरर्खास्त करके, "शाही हरम" की ओर रवाना हुआ। अन्तः पुर के मुख्य रक्षक "मलिक दीनार" अपने हथियार बन्द सैनिकों सहित, अन्तः पुर के मार्ग पर बैठ गया। उसने अकत खाँ से कहा "मुझे सुल्तान अलाउद्दीन का सिर दिखाओ तभी शाही हरम में प्रवेश करने दूँगा"।[10]

उधर अलाउद्दीन के घायल हो जाने पर तथा शोर मचाकर उसकी मृत्यु की घोषणा, उसके पायकों द्वारा कर देने से सभी व्यक्तियों ने अपनी – अपनी निर्णय क्षमतानुसार निर्णय लिया। इस प्रकार अब अलाउद्दीन के साथ "शिकारी शिविर" में साँठ या सत्तर व्यक्ति ही शेष रहे। अकंत खाँ के वापस लौट जाने पर अलाउद्दीन के स्वामी भक्त अनुचरों ने उसके हाथ के घावों को धोकर उसे रूमाल से बाँधा। क्योंकि अलाउद्दीन के हाथ से अधिक रक्त वह चुका था इसलिए जब उसे होश आया तो उसके अनुचरों ने उसे पूरे घटनाक्रम की जानकारी दी।[11]

पूरी जानकारी प्राप्त करने के बाद अलाउद्दीन ने सोचा कि अकत खाँ को मलिकों एवं अमीरों के साथ – साथ सेना के कुछ भाग का भी समर्थन प्राप्त होगा उसे एक बड़े भयंकर षडयंत्र के सन्देह रहा था। अन्यथा अकत खाँ बिना बल के इस प्रकार विद्रोह करने के साहस न करता। अलाउद्दीन न सर्वप्रथम सोचा कि वह अपनी जान बचाने के लिये झायन उलुग खाँ के पास पहुँच जाये। झायन अपने भाई के पास पहुँचने के पश्चात् राज्य पर पुनः अधिकार करने या किसी अज्ञात स्थान पर शेष जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करे। क्योंकि अलाउद्दीन अक्समात हुये इस आक्रमण से घबड़ा गया था, इसीलिये उसने झायन जाने का निर्णय लिया, किन्तु भूतपूर्व उम्दतुल के पुत्र मलिक हमीदुद्दीन जो "नायबे वकीलदर" था, ने सुल्तान को झायन जाने के लिये मना किया क्योंकि अगर एक रात भी सुल्तान की पता ठिकाना ज्ञात हुए बिना बीत गयी तो भयवश वह लोग जिन्होंने अकत खाँ की बैयत कर ली उसकी ओर हो जायेंगे। इसीलिये अन्नदाता को शिविर की ओर प्रस्थान करना चाहिये। सेना अभी भी अन्नदाता की दास होगी जैसे की वह शाही छत्र को देखेगी वह आपको सुरक्षित समझकर आपके पक्ष में स्वतः ही आ जायेगी।[12]

सुल्तान अलाउद्दीन को हमीदुद्दीन की राय उचित लगी और उसी समय वह शाही शिविर की ओर चल दिया रास्ते में उसे जो भी मिला वह अलाउद्दीन के साथ हो लिया, इस प्रकार शाही शिविर पहुँचते – पहुँचते अलाउद्दीन के पीछे 500 या 600 घुडसवार हो गये।[13]

सुल्तान अलाउद्दीन को जीवित देखकर सैनिक एवं अधिकारी बहुत बड़ी संख्या में हाथियों को लेकर उसके पास पहुँचे। अकत खाँ समझ गया कि अब उसका खेल समाप्त हो गया है इसीलिये वह अपने शिविर की ओर दौड़ा और पीछे से घोड़े पर सवार होकर अफगानपुर की ओर कुछ अनुयायियों सहित भाग गया।[15]

सुल्तान अलाउद्दीन शाही शान–शौकत के साथ अपने दरबार गया और अपने सिंहासन पर बैठकर "दरबारेआम" किया। उसी दिन विद्रोही अकत खाँ के पीछा करने के लिये मलिक ऐजुद्दीन यगाँ तथा मलिक नसिरूद्दीन नूर खाँ को भेजा। अकत खाँ को अफगानपुर के समीप पकड़ लिया गया और उसका सिर धड़ से अलग करके सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया। सुल्तान के आदेशानुसार अकत खाँ का कटा सिर भाले की नौंक पर टांग कर सेना के समक्ष घुमाया गया। तत्पश्चात् शहर देहली भेज दिया गया। झायन में अकत खाँ के छोटे भाई जिसकी उपाधि "कुतलुग ख्वाजा" थी उसकी हत्या उलुग खाँ ने उसी समय कर दी।[16]

इस प्रकार अलाउद्दीन ने विद्रोह के बारे में अधिकारियों, कर्मचारियों एवं अन्य लोगों से, जिन पर थोड़ा भी शक सम्भव था, कठोरतापूर्व पूछताछ की। जो लोग वास्तव में षडयंत्र में शामिल थे उनसे अन्य विद्रोहियों के नाम लोहे के कोड़ों से पीट–पीट कर उगलवायें गये। विद्रोहियों के परिवार को बन्दी बनाकर देहली के आस–पास के किलों में कैद कर दिया गया।[17]

इस प्रकार अलाउद्दीन ने अकत खाँ के विद्रोह का पूर्ण रूप से दमन करने के पश्चात् ही रणथम्भौर की ओर प्रस्थान किया।

सन्दर्भ

1.यह पुरानी दिल्ली से बारह मील दूर एक मैदान है जो किलधूरी के दक्षिण में है।
2.खिलजी वंश के इतिहास : के.एस.एल लाल, पृव 70.

3.तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी पृ. 273.
4.वही पृ. 272.
5."नरगाह" एक खेल के नाम था जिसमें पशुओं को चारों ओर से घेर लिया जाता था फिर उस पर मुख्य व्यक्ति द्वारा बार किया जाता था।
तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी पृ. 273.
6.वही पृ. 273.
7.दिल्ली सल्तनत : मौ. हबीब एवं निजामी, पृ. 273.
तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी पृ. 273.
8.वही पृ. 274.
9."बिस्मिल्लाह" का अर्थ है अल्लाह का नाम।
10.तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी पृ. 274.
11.वही पृ. 275.
12.तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी पृ. 275.
दिल्ली सल्तनत : मौ0 हबीब एवं निजामी, पृ. 296.
13.तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी पृ. 275.
14.मैडेबिल इण्डिया : लेनपुल, पृ. 100.
15.तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी पृ. 276.
16.तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी पृ. 276.
17.वही पृ. 276

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1.तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, अनुवाद ––– डॉ. सैयद अत्हर अब्बास रिजवी।
2.फुतूहस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल मलिक इसामी, अनु. आग मेंहदी हुसैन, आगरा 1938.
3.दिल्ली सल्तनत : मौ. हबीब एवं खलीक अहमद निजामी।
4.खिलजी वंश का इतिहास : डॉ. के.एस.लाल।
5.मैडीवल इण्डिया – लेनपूल फिशर अनविन, लंदन, 1926
6.तारीखे फरिश्ता : मुहम्मद कासिम फरिश्ता, अनुवाद फिदाअली।
7.तारीखे मुबारकशाही : याहिया सरहिन्दी, अनु. के.के. बसु।
8.मिफ्ताहुल फुतूह : अमीर खुसरा, सम्पादित एस.ए. रशीद अल्गढ़।
9.जलालुद्दीन फिरोज खिलजी : शेख अब्दुर्रशदि।
10.आदि तुर्क कालीन भारत : सौ.अ.अ. रिजवी।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज आफ ऐजूकेशन , गुरूहरसहाय फिरोजपुर (पंजाब)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : http://oldror.lbp.world/